

त्योहार से पहले महंगाई की मार

- ▶ थाली 10% महंगी, प्याज के दाम 89% उछले
- ▶ चावल और खाद्य तेल ने भी बढ़ाया रसोई का बजट

नवभारत न्यूज़ नेटवर्क नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. दिवाली से पहले खाद्य वस्तुओं की बढ़ती कीमतों ने घरेलू बजट पर दबाव बढ़ा दिया है. प्याज, चावल, खाद्य तेल और रसोई गैस महंगी होने से घर में तैयार होने वाले भोजन की लागत भी बढ़ गई है.

शाकाहारी थाली की लागत सालाना आधार पर 10 प्रतिशत बढ़कर 30.80 रुपये हो गई है. पिछले साल सितंबर में इसकी लागत 28.10 रुपये थी. इसी



अर्वाधि में मांसाहारी थाली की लागत 56 रुपये से बढ़कर 59.50 रुपये पहुंच गई, यानी इसमें 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई.

सितंबर में प्याज की कीमतों में सालाना आधार पर 89 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई. चावल 8 प्रतिशत और खाद्य तेल 12 प्रतिशत महंगा हुआ. रसोई गैस की कीमत में भी 10 प्रतिशत वृद्धि

का उल्लेख किया गया है. रोजमर्रा के भोजन में इस्तेमाल होने वाली इन वस्तुओं की कीमत बढ़ने का सीधा असर रसोई के खर्च पर पड़ता है. खासकर उन परिवारों के लिए परेशानी बढ़ सकती है, जिनकी आय का बड़ा हिस्सा राशन और जरूरी घरेलू सामान पर खर्च होता है. शाकाहारी थाली की लागत में

हालांकि, वास्तविक खर्च परिवार के आकार, खरीदी गई वस्तुओं की मात्रा और स्थानीय बाजार की कीमतों के अनुसार अलग-अलग हो सकता है. घरों में सामान्य दिनों की तुलना में अधिक पकवान बनते हैं. इसके साथ मिठाई, मेवे, उपहार और अन्य जरूरी सामान की खरीदारी भी होती है. ऐसे में रसोई की महंगाई परिवारों के कुल त्योहार खर्च को प्रभावित कर सकती है. खाद्य वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी का असर समझने के लिए केवल एक वस्तु के भाव नहीं, बल्कि पूरे महीने के राशन खर्च को देखना जरूरी है.

एक साल के भीतर 2.70 रुपये की बढ़ोतरी हुई है.

फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान पाएंगे सुनील मित्तल

नवभारत न्यूज़ नेटवर्क नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. भारती एंटरप्राइजेज के संस्थापक और चेयरमैन सुनील भारती मित्तल को फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'नेशनल ऑर्डर ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर' के नाइट यानी 'शेवैलियर' सम्मान के लिए चुना गया है. फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने उन्हें यह सम्मान देने की घोषणा की है. यह सम्मान भारत और फ्रांस के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करने तथा दूरसंचार, डिजिटल बुनियादी ढांचे और उपग्रह संचार के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने में उनके योगदान के लिए दिया जा रहा है.



रुपये के लिए हुआ आरबीआई सख्त

- ▶ विदेशी मुद्रा बाजार में सख्ती से रुपये को राहत की उम्मीद
- ▶ कारोबारियों की लागत बढ़ने की आशंका

नवभारत न्यूज़ मुंबई, 12 अक्टूबर. अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की गिरावट पर अंकुश लगाने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा बाजार में सख्ती बढ़ाने वाले कदम उठाए हैं. इनका उद्देश्य डॉलर की अतिरिक्त मांग को कम करना और वास्तविक कारोबारी जरूरतों से इतर होने वाली सौदेबाजी पर नियंत्रण लगाना है. इन उपायों से रुपये की तत्काल सहारा मिलने की उम्मीद है, लेकिन आयातकों की लागत, कंपनियों की कीमत तय करने की रणनीति और आम लोगों के घरेलू बजट पर भी



असर पड़ सकता है. नए प्रावधानों के तहत सरकारी तेल कंपनियों को डॉलर की जरूरत पूरी करने के लिए आरबीआई की विशेष व्यवस्था का इस्तेमाल करना होगा. इससे उनकी मांग का एक हिस्सा खुले विदेशी

कंपनियों यदि इस अतिरिक्त खर्च की भरपाई ग्राहकों से करती हैं, तो उत्पादों की कीमतों पर दबाव आ सकता है. हालांकि, इसका वास्तविक असर उत्पाद, आयात अनुबंध और बाजार की प्रतिस्पर्धा पर निर्भर करेगा. रुपये में सुधार होने पर विदेश से सामान खरीदने, विदेशी शिक्षा शुल्क और यात्रा के लिए डॉलर जुटाने वालों को राहत मिल सकती है. रुपये की मजबूती से निर्यातकों को अपने डॉलर के बदले अपेक्षाकृत कम रुपये मिल सकते हैं.

मुद्रा बाजार से हट सकता है. बैंकिंग व्यवस्था में आयातकों की हेजिंग और विदेशी मुद्रा जोखिम से जुड़े नियमों को भी सख्त किया गया है. इसके अलावा, वास्तविक लेनदेन से जुड़व नहीं रखने वाले कुछ डेरिवेटिव सौदों की सीमा घटाने और रह किए गए वायदा अनुबंधों को दोबारा दर्ज कराने पर रोक लगाने जैसे उपाय शामिल हैं. डॉलर के मुकाबले रुपये में कमजोरी रहने पर कच्चा तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और दूसरे आयातित उत्पादों की लागत बढ़ती है.

सैंसेक्स 299 अंक उछला निफ्टी में भी आई तेजी



नवभारत न्यूज़ मुंबई, 12 अक्टूबर. भारतीय शेयर बाजार में सोमवार को सकारात्मक शुरुआत हुई. एशियाई बाजारों में बढ़त और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से घरेलू बाजार को सपोर्ट मिला.

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 298.99 अंक यानी 0.41 प्रतिशत बढ़कर 72,771.32 पर खुला, जबकि निफ्टी 72.75 अंक यानी 0.32 प्रतिशत की बढ़त के साथ

22,593.20 पर पहुंचा. शुरुआती कारोबार में ज्यादातर सेक्टरल इंडेक्स बढ़त में रहे. निफ्टी मीडिया, निफ्टी ऑटो और निफ्टी केमिकल्स में 1 प्रतिशत तक की तेजी दर्ज की गई. वहीं, निफ्टी रियल्टी, ऑयल एंड गैस, सीमेंट, मेटल और आईटी इंडेक्स में 0.64 से 0.81 प्रतिशत तक की बढ़त रही. दूसरी ओर, निफ्टी पीएसयू बैंक में मामूली 0.01 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई. घरेलू सकारात्मक कारकों के मुकाबले वैश्विक दबाव बाजार पर ज्यादा हावी हैं. कच्चे तेल की ऊंची कीमतें और अमेरिकी बॉन्ड यील्ड का ऊंचा स्तर बाजार को प्रभावित कर सकते हैं. विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली निकट अर्वाधि में जारी रह सकती है,

एसआईपी निवेश ने बनाया नया रिकॉर्ड

नवभारत न्यूज़ नेटवर्क नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. म्यूचुअल फंड में सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश सितंबर में नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया. सितंबर में एसआईपी का माध्यम से 32,490 करोड़ रुपए का निवेश हुआ, जो अगस्त के 32,297 करोड़ रुपए के पिछले रिकॉर्ड से भी अधिक है.

सितंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में भी निवेश मजबूत रहा. इक्विटी फंड्स में शुद्ध निवेश बढ़कर 38,307 करोड़ रुपए हो गया, जबकि अगस्त में यह



▶ म्यूचुअल फंड उद्योग से निकले 1.33 लाख करोड़

29,328 करोड़ रुपए था. यानी महीने-दर-महीने आधार पर इसमें लगभग 30.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई. यह बढ़ोतरी ऐसे समय में हुई है जब पूरे म्यूचुअल फंड उद्योग में कुल मिलाकर निकासी

का दबाव देखने को मिला. सितंबर के अंत तक म्यूचुअल फंड उद्योग का कुल एसेट्स अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) 82.64 लाख करोड़ रुपए रहा, जो अगस्त में 87.08 लाख करोड़ रुपए था.

श्रेणीवार देखें तो स्मॉल कैप फंड्स में निवेश बढ़कर 9,039 करोड़ रुपए हो गया, जो अगस्त में 7,973 करोड़ रुपए था. वहीं मिड कैप फंड्स में निवेश 6,989 करोड़ रुपए से बढ़कर 7,835 करोड़ रुपए पहुंच गया. फ्लेक्सी कैप फंड्स में 6,702 करोड़ रुपए का निवेश आया, जबकि अगस्त में यह 5,059 करोड़ रुपए था.

आईपीओ से पहले दबाव में रिलायंस का शेयर

- ▶ 52 हफ्ते के निचले स्तर पर भाव

नवभारत न्यूज़ नेटवर्क नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. जियो प्लेटफॉर्मस के बहुप्रतीक्षित आईपीओ से पहले रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में गिरावट ने बाजार का ध्यान खींचा है.

सोमवार को कारोबार के दौरान शेयर एनएसई पर 1,155.10 के स्तर तक पहुंच गया. यह 52 सप्ताह का नया



निचला स्तर रहा. शेयर में कमजोरी ऐसे समय आई है, जब रिलायंस की डिजिटल और टेलीकॉम इकाई जियो प्लेटफॉर्मस भारत के सबसे बड़े आईपीओ की तैयारी कर रही है.

यूपीआई शुल्क का बोझ ग्राहकों पर पड़ने की आशंका

- ▶ हर महीने 1,500 करोड़ रुपये का अनुमान
- ▶ बैंकों से योगदान लेने का सुझाव

नवभारत न्यूज़ नेटवर्क नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. यूपीआई भुगतान पर प्रस्तावित मर्चेन्ट डिस्काउंट रेट व्यवस्था को लेकर आईआईटी बॉम्बे के विशेषज्ञों की एक तकनीकी रिपोर्ट ने उपभोक्ताओं पर अप्रत्यक्ष आर्थिक बोझ पड़ने की आशंका जताई है.

रिपोर्ट के अनुसार, भुगतान



सेवा प्रदाताओं को इस व्यवस्था से सालाना करीब 18,000 करोड़ रुपये का राजस्व मिल सकता है. हालांकि, शुल्क सीधे ग्राहकों से लेने पर रोक के बावजूद कारोबारी इसकी भरपाई वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों बढ़ाकर कर सकते हैं. ऐसे में छोटे मूल्य के यूपीआई भुगतान करने वाले

ग्राहक भी प्रभावित हो सकते हैं. प्रस्तावित व्यवस्था के तहत दो हजार रुपये से अधिक के कुछ कारोबारी यूपीआई भुगतानों पर अधिकतम 0.40 प्रतिशत एमडीआर लगाया जा सकता है. इसकी अधिकतम सीमा प्रति लेनदेन 300 रुपये बताई गई है. व्यक्ति से व्यक्ति के बीच धन हस्तांतरण और दो हजार रुपये तक के कारोबारी भुगतान मुफ्त रखने का प्रावधान है. कुछ आवश्यक क्षेत्रों के लेनदेन पर पांच रुपये का निर्धारित शुल्क और पूंजी बाजार से जुड़े लेनदेन पर 0.02 प्रतिशत शुल्क का उल्लेख भी रिपोर्ट में है.

समाचार विशेष

वाराणसी : स्नातक चुनाव के लिए भाजपा ने कसी कमर

- ▶ बृथ से मतदाता तक पहुंचने की रणनीति तैयार

वाराणसी, 12 अक्टूबर. अक्टूबर को भाजपा महानगर कार्यालय गुलाबबाग में स्नातक निर्वाचन जीत सुनिश्चित करने के लिए भाजपा ने सांगठनिक ताकत झोंकने की तैयारी शुरू कर दी है. मतदाता सूची के सत्यापन से लेकर बृथ स्तर पर जनसंपर्क और मतदान की तकनीकी बारीकियों तक पार्टी ने चुनावी रणनीति का खाका तैयार किया है.

भारतीय जनता पार्टी महानगर की समीक्षा बैठक में कार्यकर्ताओं को प्रत्येक स्नातक मतदाता तक पहुंचने, मतदाता सूची की त्रुटियां दूर करने और मतदान के दौरान किसी भी प्रकार की गलती से बचने के निर्देश दिए गए.

बैठक में आगामी 23 तारीख को प्रस्तावित मतदान को लेकर चर्चा हुई. कार्यकर्ताओं को मतदान प्रक्रिया की जानकारी देते हुए चुनाव संचालन प्रमुख पूर्व प्रदेश मंत्री संजय राय ने बताया कि मतपत्र पर वरीयता अंकित करने के नियमों का सही ढंग से पालन करना आवश्यक है. मतदाताओं को निर्धारित तरीके से अपनी वरीयता दर्ज करने और मतदान केंद्र पर उपलब्ध अधिकृत पेन का ही

इस्तेमाल करने के बारे में जागरूक करने पर जोर दिया. पूर्व क्षेत्रीय उपाध्यक्ष एवं चुनाव संचालन समिति सह प्रमुख सुधीर मिश्रा ने बताया कि सांगठनिक सक्रियता बढ़ाने के लिए संचालन समिति के सदस्यों को प्रतिदिन तीन से चार घंटे तथा विधानसभा प्रभारियों और सह-प्रभारियों को कम से कम एक घंटा कार्यालय में समय देने का निर्देश दिया.

मोबाइल ऐप की सहायता लेने पर दिया जोर मतदाता सूची में नाम खोजने और विवरण का सत्यापन करने के लिए मोबाइल ऐप की सहायता लेने पर जोर दिया गया. इसके माध्यम से मतदाता का नाम और पिता का नाम दर्ज कर संबंधित विवरण प्राप्त करने की व्यवस्था बताई गई. सूची में नामों की वर्तनी संबंधी गड़बड़ियों को दूर करने के लिए डिजिटल और हस्तलिखित सुधियों का मिलान करने तथा विसंगतियां मिलने पर संबंधित कार्यालय को जानकारी देने के निर्देश दिए गए. बैठक में कार्यकर्ताओं को संपर्क अभियान को विनम्र बनाए रखने और मतदान प्रक्रिया की जानकारी अधिक से अधिक मतदाताओं तक पहुंचाने को कहा गया. साथ ही वरीयता आधारित मतदान में द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वरीयता के महत्व को भी समझाया गया.

हिमालय में तटरक्षक बल ने दिखाई ताकत

- ▶ टीम ने 7,045 मीटर ऊंची चोटी पर हासिल की सफलता
- ▶ 2027 में एवरैस्ट अभियान की भी शुरु की तैयारी

नवभारत कनेक्ट देहरादून, 12 अक्टूबर। भारतीय तटरक्षक बल की 17 सदस्यीय पर्वतारोहण टीम ने 7,045 मीटर ऊंचे माउंट मुकुट का सफल आरोहण कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है. 7 अक्टूबर को पूरी हुई इस चढ़ाई के बाद सोमवार को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देहरादून में आयोजित समारोह में अभियान दल का स्वागत किया.

भारतीय तटरक्षक बल के



अपर महानिदेशक आनंद प्रकाश बड़ोला भी इस अवसर पर मौजूद रहे. माउंट मुकुट का आरोहण बल के 18 महीने के गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का पांचवां और अंतिम चरण था. इस प्रशिक्षण का उद्देश्य वर्ष 2027 में भारतीय तटरक्षक बल के स्वर्ण जयंती समारोह के

सितंबर 2026 को शुरू हुआ था. टीम ने 1 अक्टूबर को बेस कैंप-डू स्थापित किया. इसके बाद दुर्गम पर्वतीय भूभाग और प्रतिकूल मौसम की चुनौतियों का सामना करते हुए 7 अक्टूबर को 7,045 मीटर ऊंची माउंट मुकुट चोटी पर सफलतापूर्वक आरोहण किया. समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अभियान दल के साहस, दृढ़ संकल्प और सहनशक्ति की सराहना की. उन्होंने इस उपलब्धि को राष्ट्रीय गौरव और साहस की भावना का प्रतीक बताया. अपर महानिदेशक आनंद प्रकाश बड़ोला ने पर्वतारोहियों को उनकी मानसिक दृढ़ता, शारीरिक क्षमता और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में बेहतर तालमेल के लिए बधाई दी.

विशेष एनडीए के साथी दल गठबंधन विद डिफरेंस के रथ पर सवार

क्यों अलग राह तलाश रहे हैं चिराग और मांझी ?

पटना, 12 अक्टूबर. केंद्र की राजनीति हलचल के बीच एनडीए के साथी दल गठबंधन विद डिफरेंस के रथ पर सवार हो चले हैं. बिहार की राजनीति भी इससे अछूती नहीं है. बात राजनीतिक गलियायों की करें तो एनडीए के भीतर भी कुछ ऐसे दल हैं जो अपनी राह कुछ इस तरह से बनाते हैं जो हर गठबंधन की राजनीति को किसी न किसी तरह प्रभावित करते हुए दिखते हैं. ये वे ऐसे बिंदु हैं जो बगैर किसी मुश्किल पटरी बदलने में सहायित्व दे सके.



10 अक्टूबर को कांग्रेस जनता पार्टी के जंतर-मंतर पर प्रस्तावित प्रदर्शन के दिन इस आंदोलन को रोकने के लिए जितनी कोशिश

आपसी द्वंद्व एक वजह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के केन्द्रीय नेतृत्व में बदलाव और आपसी द्वंद्व की खबरों ने भी साथी दलों को असहज किया. बीजेपी की बहुमत की भी सरकार नहीं रहने से कभी नीतीश कुमार तो कभी चंद्र बाबू नायडू के नाराज होने की खबर ने भी साथी दलों को असहज किया. विपक्षी दलों द्वारा अवसर पार्टी के भीतर नए सांगठनिक ढांचे और वैचारिक प्राथमिकताओं को लेकर सवाल उठाए जाते रहे.

कांग्रेस के लिए उपचुनाव का संदेश

नई दिल्ली, 12 अक्टूबर. पश्चिम बंगाल की दो विधानसभा सीटों और असम की एक लोकसभा सीट के नतीजों का संदेश यह है कि अब मुस्लिम भी भाजपा को वोट दे रहे हैं और साथ ही अपने नेता की तलाश भी कर रहे हैं. अगर ऐसा नहीं होता तो भाजपा किसी स्थिति में रेजीनगर विधानसभा सीट नहीं जीत सकती थी और नगांव लोकसभा सीट पर भी उसका जीतना मुमकिन नहीं था.

लेकिन नगांव

दिलचस्प परिघटना है, जिस पर विचार करने की जरूरत है. गौरतलब है कि असम में मुस्लिम मतदाताओं ने पहले कांग्रेस को छोड़ कर अजमल की पार्टी का साथ दिया था लेकिन पिछले दो चुनावों में उसने अजमल को छोड़ा और कांग्रेस के साथ खड़े हुए तभी इस बार कांग्रेस के 19 में से 18 विधायक मुस्लिम जीते हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में धुबरी सीट पर कांग्रेस के हाथ अजमल 10 लाख से ज्यादा वोट से हारे थे. लेकिन अब सीट पर भाजपा न सिर्फ जीती, बल्कि दूसरे स्थान पर रहे एआईयूडीएफ के नेता बदरुद्दीन अजमल और कांग्रेस की शिबोमणी बोरा दोनों को मिला कर जीतने वोट मिले उससे ज्यादा वोट भाजपा के देवाशीष शर्मा को मिले. इसी तरह की स्थिति रेजीनगर सीट पर भी रही. वहां तो सभी विपक्षी पार्टियां मिल कर भी भाजपा उम्मीदवार को मिले वोट से बहुत पीछे रहें. यह बहुत

फिर ऐसा लग रहा है कि मुस्लिम अजमल के साथ जा रहे हैं. अजमल साढ़े पांच लाख से ज्यादा वोट लेकर दूसरे स्थान पर रहे, जबकि कांग्रेस सवा लाख वोट के साथ बहुत पीछे तीसरे स्थान पर रही. ध्यान रहे कांग्रेस, तुण्मूल कांग्रेस या लेफ्ट किसी ने भी यह नहीं कहा है कि असम की नगांव या पश्चिम बंगाल की रेजीनगर और नंदीगढ़ सीट पर वोट चोरी करके भाजपा जीती है.

अजमल भी मुस्लिम वोट भुना नहीं पाए

असम की नगांव सीट कांग्रेस के प्रचोत बोरदोलोई के इस्तीफे से खाली हुई थी. वहां से भाजपा ने पूर्व आईएसए अधिकारी देवाशीष शर्मा को टिकट दिया. वे नगांव के कलेक्टर रह चुके हैं और निजी तौर पर बहुत लोकप्रिय हैं. कहा जा रहा है कि इस वजह से मुस्लिम वोट उनको मिले. ध्यान रहे नगांव में मुस्लिम आबादी 60 फीसदी के करीब है. वहां से असम के सबसे बड़े मुस्लिम नेता बदरुद्दीन अजमल खुद लड़ने पहुंचे थे.